नई शिक्षा नीतिः एक नजर में

*डॉ. यादव सिंह

परिचय :

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, जो 21वीं सदी की प्रारंभिक शिक्षा नीति है। इसको राष्ट्र की समृद्ध विरासत और मूल सिद्धांतों के साथ संरेखित करने के लिए सावधानीपूर्वक तैयार किया गया है। यह दूरदर्शी नीति प्राथमिक विद्यालय शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण संशोधनों की एक विस्तृत श्रृंखला को शामिल करती है। इसका अंतिम उद्देश्य भारत को उत्कृष्टता और दक्षता के विश्व स्तर पर प्रसिद्ध केंद्र में बदलना है। इस नीति का सर्वोपरि फोकस यह सुनिश्चित करना है कि शिक्षा न केवल ज्ञान-उन्मुख हो बल्कि कौशल-आधारित भी हो, जिससे छात्रों को तेजी से विकसित हो रही दुनिया में आगे बढ़ने के लिए आवश्यक विशेषज्ञता और क्षमताओं से परिपूर्ण किया जा सके।

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 29 जुलाई 2020 को नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी 2020) को अपनी मंजूरी दे दी। यह भारत के शैक्षिक परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। इस सुधार को पिछले 34 वर्षों में देश की शिक्षा प्रणाली में सबसे बड़ा सुधार माना जा रहा है। एनईपी 2020, जिसे के. कस्तूरीरंगन के मार्गदर्शन में तैयार किया गया था, उस राष्ट्रीय शिक्षा नीति का एक संशोधित संस्करण है जिसे शुरू में 1986 में तैयार किया गया था और बाद में 1992 में अद्यतन किया गया था। समय बीतने के साथ, यह स्पष्ट हो गया कि शिक्षा क्षेत्र की उभरती जरूरतों को पूरा करने के लिए कई महत्वपूर्ण बदलाव आवश्यक थे । नतीजतन, लगभग साढ़े तीन दशकों के बाद, 21वीं सदी की आकांक्षाओं और लक्ष्यों को समाहित करते हुए एनईपी 2020 पेश किया गया। इसका व्यापक मसौदा 108 पृष्ठों में विस्तारित है, जो देश में शिक्षा परिदृश्य को बदलने के लिए एक रोडमैप की रूपरेखा तैयार करता है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का प्राथमिक उद्देश्य राष्ट्र के समग्र विकास के लिए आवश्यक शैक्षिक आवश्यकताओं को संबोधित करना है।

कुंजी शब्द : विद्यालय शिक्षा, उच्च शिक्षा, नई शिक्षा नीति, शिक्षा मंत्रालय, एनसीईआरटी, यूजीसी, पाठ्यक्रम ।

एनईपी 2020 कार्यान्वयन :

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी 2020) का कार्यान्वयन इस समय पूरे देश में रणनीतिक और क्रमिक तरीके से चल रहा है। 9 मई 2022 को प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में एक महत्वपूर्ण बैठक हुई, जिसका प्राथमिक उद्देश्य इस अभूतपूर्व शिक्षा नीति की प्रगति और कार्यान्वयन का आकलन करना था।

बैठक का उद्देश्य हाल ही में शुरू की गई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के कार्यान्वयन में हुई प्रगति का आकलन करना और इसके कार्यान्वयन के लिए रणनीतिक योजना और आगामी कदमों के संबंध में व्यापक चर्चा करना था। प्रधान मंत्री मोदी ने केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के साथ-साथ शिक्षा मंत्रालय, एनसीईआरटी और यूजीसी का प्रतिनिधित्व करने वाले विभिन्न प्रतिष्ठित मंत्रियों और अधिकारियों के साथ बैठक की अध्यक्षता की। बैठक के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस बात पर जोर दिया कि एनईपी 2020 का प्राथमिक उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि शिक्षा क्षेत्र समानता, समावेशिता और उत्कृष्टता हासिल करे।

बैठक के दौरान, प्रधान मंत्री मोदी ने अधिकारियों और मंत्रियों को स्पष्ट निर्देश दिए, उनसे वांछित लक्ष्य प्राप्त करने के अंतिम उद्देश्य के साथ विभिन्न महत्वपूर्ण परियोजनाओं और पहलों के सफल कार्यान्वयन के लिए सावधानीपूर्वक रणनीति बनाने और व्यापक योजनाओं की रूपरेखा तैयार करने का आग्रह किया।

नई शिक्षा नीति 2020 का विजन :

भारत में हाल ही में शुरू की गई शिक्षा नीति ने युवा आबादी के लिए उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा तक व्यापक और निष्पक्ष पहुंच प्रदान करने का उद्देश्य निर्धारित किया है। 2015 की शुरुआत में, भारत ने वर्ष 2030 तक समावेशी और समान गुणवत्ता वाली शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से संयुक्त राष्ट्र के वैश्विक शिक्षा विकास एजेंडे को सतत विकास लक्ष्य-4 (एसडीजी /Sustainable Development Goal-4) के रूप में अपनाया।

भारत के SDG4 वैश्विक एजेंडे ने यह सुनिश्चित करने के लिए महत्वाकांक्षी उद्देश्य निर्धारित किए हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को बेहतर गुणवत्ता वाली शीर्ष शिक्षा तक पहुंच प्राप्त हो। एन.इ.पी. 2020 एक योजना के रूप में, सभी व्यक्तियों के बीच आजीवन सीखने के अवसरों को बढ़ावा देने के लिए समर्पित है। निम्नलिखित महत्वपूर्ण लक्ष्यों को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए भारत में मौजूदा शिक्षा प्रणाली में व्यापक और परिवर्तनकारी बदलाव करना जरुरी हो जाता है।

1.हाल ही में लागू की गई शिक्षा नीति का प्राथमिक लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि भारत में प्रत्येक छात्र को असाधारण और सर्वोच्च शिक्षा प्राप्त हो। यह नीति न केवल छात्रों की संज्ञानात्मक क्षमताओं को विकसित करने बल्कि उनकी समस्या-समाधान कौशल और मानसिकता को विकसित करने पर भी महत्वपूर्ण जोर देने के लिए डिज़ाइन की गई है।

नव निर्मित शिक्षा नीति का प्राथमिक उद्देश्य भारत में युवा व्यक्तियों की संपूर्ण आबादी के बीच सामाजिक, नैतिक और भावनात्मक दक्षताओं को बढ़ावा देना और विकसित करना है।

2.इस शिक्षा नीति का उद्देश्य केवल विद्यार्थियों की भलाई तक ही सीमित नहीं है; बल्कि, यह छात्रों, शिक्षकों और समग्र शैक्षिक ढांचे को शामिल करते हुए संपूर्ण भारतीय शिक्षा प्रणाली को समृद्ध करने का प्रयास करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का कार्यान्वयन आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डेटा साइंस और प्रौद्योगिकी जैसी आधुनिक तकनीकों को शामिल करके शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने की दिशा में किया गया है। इसके अतिरिक्त, यह शिक्षण पेशे में सबसे प्रतिभाशाली और असाधारण व्यक्तियों को आकर्षित करने और भर्ती करने के लिए व्यापक प्रशिक्षण और मूल्यांकन कार्यक्रमों के प्रावधान पर जोर देता है। इसके अलावा, यह नीति नवीन मॉडल बनाने का प्रयास करती है जो शिक्षा प्रणाली को और मजबूत करेगी।

एनईपी 2020 एक नवीन शैक्षिक संरचना (5+3+3+4) :

1.हाल ही में शुरू की गई राष्ट्रीय शिक्षा नीति, जिसे नई शिक्षा नीति 2020 के रूप में भी जाना जाता है, का उद्देश्य स्कूली शिक्षा में मौजूदा 10+2 शैक्षिक ढांचे में सुधार और वृद्धि करना है। इसमें 5+3+3+4 नाम से एक नवीन शैक्षिक संरचना के कार्यान्वयन का प्रस्ताव है, जो 3 से 18 वर्ष की आयु के छात्रों की जरूरतों को पूरा करेगा। नई नीति के तहत, पूर्ण पुनर्गठन के साथ पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण बदलाव (जैसे विषयों की संख्या और अधिक समसामयिक शैक्षणिक संरचना की ओर बदलाव) किए जाएंगे ।

2.मौजूदा शैक्षणिक प्रणाली, जिसे 10+2 संरचना के रूप में जाना जाता है, 3 से 6 वर्ष की आयु के बच्चों को औपचारिक शिक्षा प्रदान करने के बारे में ज्यादा नहीं बताती है, क्योंकि औपचारिक स्कूली शिक्षा केवल 6 वर्ष की आयु में कक्षा एक की शुरुआत के साथ शुरू होती है। हालाँकि, प्रस्तावित 5+3+3+4 शैक्षणिक संरचना 3 साल की उम्र से शुरू होने वाले एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में प्रारंभिक बचपन देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई / Early Childhood Care and Education) को शामिल करके एक महत्वपूर्ण बदलाव पेश करती है। यह नया शैक्षणिक ढांचा, व्यापक विकास को बढ़ावा देने, शुरुआती वर्षों से ही बच्चों की भलाई सुनिश्चित करने और समग्र सीखने के अनुभव को बढ़ाने का प्रयास करता है।

3.हाल ही में लागू की गई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार, एक महत्वपूर्ण बदलाव पेश किया गया है, जिसके तहत 3 से 6 वर्ष की आयु के बच्चों को अब दो साल की अवधि तक चलने वाले व्यापक पूर्व-प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम से गुजरने का अवसर मिलेगा। पूर्व-प्राथमिक स्कूली शिक्षा की इस नव स्थापित प्रणाली के पीछे प्राथमिक उद्देश्य युवा शिक्षार्थियों को उनकी आगामी प्राथमिक शिक्षा यात्रा के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान से प्रभावी ढंग से समृद्ध करना है।

4.शिक्षा के महत्वपूर्ण प्रारंभिक वर्षों को प्राथमिकता देने और शुरुआत से ही एक ठोस शैक्षिक ढांचा स्थापित करने के लिए, आंगनवाड़ी या समुदाय-आधारित नर्सरी स्कूलों में जाने वाले बच्चों को दो साल की अवधि के लिए मुफ्त शिक्षा प्रदान करने के लिए एक नई पहल लागू की जाएगी। इस कार्यक्रम का उद्देश्य तीन से छह वर्ष की आयु के बच्चों को इंटरैक्टिव गतिविधियों में डुबोना है जो खेल और मनोरंजन के माध्यम से सीखने को बढ़ावा देते हैं। इस दृष्टिकोण को स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल करके, यह सुनिश्चित किया जाता है कि 3-6 आयु वर्ग के सभी बच्चों को आनंदमय, आकर्षक और आनंददायक वातावरण में व्यापक शिक्षा प्राप्त हो।

हाल ही में शुरू की गई पाठ्यक्रम संरचना, जिसे 5+3+3+4 के नाम से जाना जाता है, का लक्ष्य क्रमशः 3-8, 8-11, 11-14 और 14-18 आयु वर्ग के छात्रों को शामिल करना है। इस नवोन्मेषी प्रणाली में प्री-स्कूलिंग या आंगनवाड़ी को समर्पित 3 साल का प्रारंभिक चरण शामिल है, जिसके बाद 12 साल की व्यापक शैक्षिक यात्रा होती है।

नई पाठ्यचर्या :

1.एनसीईआरटी प्रारंभिक शिक्षा / बचपन की शिक्षा को प्राथमिकता दे रही है। यह प्रारंभिक बचपन की देखभाल और शिक्षा के लिए एक व्यापक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या और शैक्षणिक ढांचा तैयार करेगी, जिसे एनसीपीएफईसीई (National Curricular and Pedagogical Framework for Early Childhood Care and Education) कहा जाएगा।

2.जो पाठ्यक्रम और शैक्षिक ढांचा लागू किया जाएगा वह 8 वर्ष तक के बच्चों की जरूरतों को पूरा करेगा। प्रारंभिक बचपन की देखभाल और शिक्षा का प्रावधान आंगनबाड़ियों और प्री-स्कूलों सहित संस्थानों के व्यापक नेटवर्क के माध्यम से किया जाएगा। शिक्षा के प्रभावी वितरण को सुनिश्चित करने के लिए, शिक्षकों और आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को प्रारंभिक बचपन देखभाल और Early Childhood Care and Education शिक्षाशास्त्र और पाठ्यक्रम के सिद्धांतों और प्रथाओं के आधार पर प्रशिक्षण दिया जाएगा।

3.एनसीईआरटी प्रारंभिक बचपन देखभाल और शिक्षा (एनसीपीएफईसीई) के लिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम और शैक्षिक ढांचा विकसित करने के लिए जिम्मेदार होगी, जिसे मानव संसाधन विकास, महिला और बाल विकास (डब्ल्यूसीडी), स्वास्थ्य और परिवार कल्याण (एचएफडब्ल्यू) और जनजातीय मामले मंत्रालयों द्वारा संयुक्त रूप से लागू किया जाएगा।

मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता ज्ञान प्राप्त करना :

2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) का उद्देश्य मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मक कौशल के विकास को अधिक महत्व देना है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, प्रत्येक राज्य को एक कार्यान्वयन योजना बनाने की आवश्यकता होगी जो वर्ष 2025 तक ग्रेड 3 तक के छात्रों के लिए सभी प्राथमिक विद्यालयों में सार्वभौमिक मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता सुनिश्चित करे। एनईपी इस योजना की तैयारी की सुविधा प्रदान करेगी।

स्कूल पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र में प्रमुख सुधार :

1.आगामी शैक्षिक पाठ्यक्रम को समकालीन कौशल-आधारित शिक्षा (skill education को एकीकृत करके छात्रों के समग्र विकास को बढ़ावा देने के लिए सावधानीपूर्वक तैयार किया जाएगा जो महत्वपूर्ण सोच क्षमताओं (critical thinking) और व्यावहारिक सीखने के अनुभवों को बढ़ाने पर बड़े पैमाने पर ध्यान केंद्रित करता है।

2.छात्रों की विविध रुचियों और जुनून को पूरा करने के लिए, उन्हें उन विषयों का चयन करने की स्वतंत्रता दी जाएगी जो उनकी व्यक्तिगत प्राथमिकताओं के अनुरूप हों। इसके अलावा, शैक्षिक अनुभव को बढ़ाने के लिए पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण संशोधन लागू किए गए हैं। यह उल्लेखनीय है कि कला और विज्ञान, सह-पाठ्यचर्या और पाठ्येतर गतिविधियों के साथ-साथ व्यावसायिक और शैक्षणिक धाराओं के बीच अब कोई टकराव या तनाव नहीं होगा।

स्कूल शिक्षा :

बच्चों के समग्र विकास और शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए, स्कूलों को परिसरों या समूहों में व्यवस्थित किया जाएगा, जो उनके व्यापक विकास के लिए समर्पित प्रतिष्ठानों के रूप में कार्य करेंगे। ये स्कूल ऐसे पोषणकारी वातावरण के रूप में काम करेंगे जहां छात्र आवश्यक जीवन कौशल हासिल कर सकेंगे। मौलिक शिष्टाचार विकसित कर सकेंगे और कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति के रूप में विकसित हो सकेंगे। इसके अलावा, स्कूलों को आवश्यक सुविधाएं और संसाधन रखने के लिए बाध्य किया जाएगा, जिसमें अच्छी तरह से बनाए रखा बुनियादी ढांचा, अच्छी तरह से भंडारित पुस्तकालय और एक अत्यधिक सक्षम और समर्पित शिक्षण स्टाफ शामिल है।

बहुभाषावाद और भाषा की शक्ति :

विश्व स्तर पर यह व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त है कि छोटे बच्चों को जब उनकी मूल भाषा या उनके घरों में बोली जाने वाली भाषा में पढ़ाया जाता है तो उनमें अवधारणाओं को तेजी से सीखने और समझने की क्षमता अधिक होती है। सीखने की इस प्राकृतिक प्रक्रिया को बढ़ाने के लिए, नई शुरू की गई शिक्षा नीति का उद्देश्य शिक्षा के प्राथमिक माध्यम के रूप में मातृभाषा या स्थानीय भाषा के उपयोग को प्रोत्साहित करना है, इस दृष्टिकोण को ग्रेड 5 तक लागू करने और आदर्श रूप से इसका विस्तार कक्षा 8 और उससे आगे तक करने पर ध्यान केंद्रित करना है।

भारत में बहुभाषावाद को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है क्योंकि घरों में कई भाषाएँ बोली जाती हैं। परिवार के विभिन्न सदस्यों के लिए अपनी मातृभाषा या स्थानीय भाषा के अलावा किसी अन्य भाषा में संवाद करना असामान्य नहीं है। इसलिए, अनेक भाषाओं के लिए समर्थन को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है।

नई शिक्षा नीति के सिद्धांत 2020 :

भारत में हाल ही में लागू की गई शिक्षा नीति विशिष्ट सिद्धांतों पर आधारित है, जिसका उद्देश्य देश की युवा पीढ़ी को उत्कृष्ट और शीर्ष स्तर की शिक्षा प्रदान करना है। इस नवीन शिक्षा नीति का प्राथमिक लक्ष्य केवल जनता को ज्ञान

प्रदान करने से परे है क्योंकि यह युवाओं के बीच जिम्मेदार और कर्तव्यनिष्ठ व्यक्तियों को विकसित करने का भी प्रयास करता है।

1.हालिया शिक्षा प्रणाली का प्राथमिक उद्देश्य युवा व्यक्तियों में सकारात्मक गुणों और मूल्यों को बढ़ावा देना है एवं उन्हें अनुकरणीय व्यक्तियों में ढालना है जो अपने समुदायों में सार्थक योगदान दे सकते हैं। शिक्षा का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य तार्किक सोच और व्यवहार को विकसित करना है जिसमें दया, समझ, नवीन सोच और नैतिक सिद्धांतों जैसे तत्व शामिल हैं।

2.अद्यतन शैक्षिक दृष्टिकोण प्रत्येक छात्र की विशिष्ट प्रतिभाओं और कौशलों को पहचानने और बढ़ावा देने पर महत्वपूर्ण जोर देता है। माता-पिता और शिक्षकों दोनों के साथ मिलकर काम करके, इस अभिनव प्रणाली का लक्ष्य शैक्षणिक और गैर-शैक्षणिक दोनों क्षेत्रों को शामिल करते हुए छात्र के जीवन के विभिन्न पहलुओं में सर्वांगीण विकास करना है।

3.नई शिक्षा नीति छात्रों के लिए मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मक कौशल को प्राथमिकता देने पर जोर देती है। इस नीति का लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि सभी छात्र, चाहे उनका ग्रेड स्तर कुछ भी हो, वे ग्रेड 3 तक पढ़ने, लिखने और गणित में आवश्यक कौशल से परिपूर्ण हों।

4.आगामी शिक्षा नीति का इरादा विज्ञान, कला और वाणिज्य धाराओं के बीच किसी भी असमानता को खत्म करना है। कार्यक्रमों और विषयों के चयन में अधिक लचीलापन प्रदान करके, इस नीति का उद्देश्य छात्रों को उनकी अद्वितीय प्रतिभा और जुनून के साथ अपनी शैक्षिक यात्रा को संरेखित करने के लिए सशक्त बनाना है। परिणामस्वरूप, छात्रों को अपनी व्यक्तिगत रुचियों और योग्यताओं के आधार पर अपना शैक्षिक मार्ग चुनने की स्वतंत्रता होगी।

5.कला और विज्ञान के बीच किसी भी अंतर को समाप्त करते हुए शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों को समान महत्व दिया जाएगा। शैक्षणिक और व्यावहारिक दोनों विषयों के साथ-साथ पाठ्यचर्या और पाठ्येतर गतिविधियों को समान रूप से महत्वपूर्ण माना जाएगा।

6.हमारे बहु-विषयक समाज की मांगों को पूरा करने के लिए, हम एक शैक्षिक दृष्टिकोण अपनाएंगे जो विभिन्न विषयों को शामिल करता है और विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, मानविकी और खेल में ज्ञान और कौशल का व्यापक दृष्टिकोण रखता है। यह समग्र शिक्षा व्यक्तियों को इन विविध क्षेत्रों के अंतर्संबंधों और अन्योन्याश्रितताओं की एक अच्छी तरह से समझ से समृद्ध करेगी। उन्हें हमारी जटिल और तेजी से विकसित हो रही दुनिया में प्रभावी ढंग से निर्देशित करने और योगदान करने के लिए तैयार करेगी।

7.परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन करने के उद्देश्य से जानकारी को केवल याद रखने के बजाय विषय वस्तु की अंतर्निहित अवधारणाओं को समझने पर अधिक ध्यान दिया जाएगा।

8.छात्रों को रचनात्मक सोच में संलग्न होने के लिए प्रेरित किया जाएगा और उनके महत्वपूर्ण सोच कौशल को विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा।

9.नव क्रियान्वित राष्ट्रीय शिक्षा नीति का उद्देश्य मानवीय नैतिकता और संवैधानिक मूल्यों की व्यापक समझ को बढ़ावा देना है, जिसमें सहानुभूति, जिम्मेदारी, स्वच्छता, दूसरों के लिए सम्मान, सार्वजनिक संपत्ति के लिए सम्मान, वैज्ञानिक स्वभाव और समानता जैसे महत्वपूर्ण गुण शामिल हैं। यह नीति यह सुनिश्चित करने के लिए डिज़ाइन की गई है कि

छात्रों को एक सर्वांगीण शिक्षा प्राप्त हो जो न केवल शैक्षणिक कौशल पर ध्यान केंद्रित करती है बल्कि समाज में व्यक्तियों के समग्र विकास के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण नैतिक सिद्धांतों को भी स्थापित करती है। इन नैतिक शिक्षाओं को पाठ्यक्रम में शामिल करके, नीति का उद्देश्य दयालु और जिम्मेदार नागरिकों की एक ऐसी पीढ़ी तैयार करना है जो अपने साथी मनुष्यों, पर्यावरण और हमारे देश को संचालित करने वाले सिद्धांतों के प्रति सम्मान की गहरी भावना रखते हों। इसके अतिरिक्त, पाठ्यक्रम में वैज्ञानिक स्वभाव को शामिल करने से छात्रों को तर्कसंगत और विश्लेषणात्मक मानसिकता विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जिससे उन्हें जानकारी का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने, स्वतंत्र रूप से सोचने और समाज की प्रगति में योगदान करने का अधिकार मिलता है।

10.नई शिक्षा नीति के कार्यान्वयन से बहुभाषावाद को बढ़ावा देने, भारत में स्थानीय भाषाओं के संरक्षण और विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ने की उम्मीद है, साथ ही शिक्षण (सीखना) के एक उपकरण के रूप में शिक्षा के क्षेत्र में भाषा के अत्यधिक प्रभाव को पहचानने में भी मदद मिलेगी।

11.प्रभावी संचार कौशल दूसरों के साथ अच्छा काम करने की क्षमता और एक टीम के रूप में सहयोग करने में सक्षम होना महत्वपूर्ण जीवन कौशल हैं जो किसी के जीवन के हर चरण में आवश्यक हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि आगामी शिक्षा पाठ्यक्रम में कम उम्र से ही इन कौशलों को शामिल किया जाए।

12.इस नीति का मुख्य उद्देश्य सीखने की प्रक्रिया में चल रहे रचनात्मक आकलन के उपयोग को प्राथमिकता देना है, न कि योगात्मक आकलन पर बहुत अधिक निर्भर रहना। योगात्मक आकलन सच्ची शिक्षा के बजाय कोचिंग की संस्कृति को बढ़ावा देता है।

13.शिक्षा में प्रौद्योगिकी का उपयोग क्षेत्र की प्रगति के लिए महत्वपूर्ण है, और शिक्षण, सीखने और मूल्यांकन प्रक्रियाओं में इसके व्यापक समावेश से छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों को समान रूप से लाभ हो सकता है।

14.शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य प्रत्येक छात्र के समग्र विकास को सुविधाजनक बनाने के लिए प्रारंभिक बचपन की देखभाल से लेकर स्कूली शिक्षा और उच्च शिक्षा तक शिक्षा के सभी पहलुओं में समान अवसर और समावेशिता की गारंटी देना है।

15.शिक्षक और संकाय सदस्य शिक्षा प्रणाली के कामकाज में इसकी रीढ़ की हड्डी के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रणाली की प्रभावशीलता सुनिश्चित करने के लिए, शिक्षकों और संकाय सदस्यों से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर महत्वपूर्ण जोर दिया जाएगा, जिसमें उनकी भर्ती, निरंतर व्यावसायिक विकास, सकारात्मक कार्य वातावरण का प्रावधान और उनकी सेवा शर्तों में सुधार शामिल है। इन प्रयासों का उद्देश्य शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाना और शिक्षकों और छात्रों दोनों की वृद्धि और सफलता का समर्थन करना है। शिक्षकों की भलाई और विकास को प्राथमिकता देकर, हम एक मजबूत और संपन्न शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा दे सकते हैं जिससे समग्र रूप से समाज को लाभ होगा।

16.भारत में हाल ही में शुरू की गई शिक्षा नीति को देश की विरासत, मूल्यों और विविध सांस्कृतिक परंपराओं को संरक्षित करने और मनाने पर जोर देने के साथ डिजाइन किया गया है। इसका उद्देश्य शिक्षा पाठ्यक्रम में प्राचीन और आधुनिक दोनों ज्ञान प्रणालियों को शामिल करके भारतीय नागरिकों के बीच गर्व की भावना पैदा करना है। यह नीति भारत की सांस्कृतिक विरासत की समृद्धि और गहराई को स्वीकार करती है। इस ज्ञान को भावी पीढ़ियों तक पहुंचाने के महत्व पर जोर देती है।

नई शिक्षा नीति की मुख्य विशेषताएं :

1.राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मुख्य उद्देश्य एक शैक्षिक ढांचा स्थापित करना है जो न केवल सभी युवाओं को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करता है बल्कि पूरे देश में क्रांति लाने की क्षमता रखता है, जिससे एक समृद्ध ज्ञान समाज का मार्ग प्रशस्त होता है। यह नीति भारत को ज्ञान की एक वैश्विक शक्ति के रूप में परिवर्तित करने की कल्पना करती है जहां व्यक्तियों को विभिन्न विषय क्षेत्रों की गहरी समझ होती है और वे तेजी से विकसित हो रही दुनिया में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए आवश्यक कौशल और दक्षताओं से लैस होते हैं। यह सुनिश्चित करके कि प्रत्येक नागरिक को सर्वोच्च शिक्षा तक पहुंच प्राप्त हो, राष्ट्रीय शिक्षा नीति जिज्ञासा, नवाचार और आजीवन सीखने की संस्कृति को बढ़ावा देने का प्रयास करती है, जो अंततः भारत को ज्ञान और बौद्धिक कौशल के वैश्विक क्षेत्र में एक अग्रणी शक्ति के रूप में स्थापित करती है।

2.यह सुनिश्चित करने के अलावा कि शिक्षा सार्वभौमिक रूप से उच्च मानक की है, नई शिक्षा नीति मूल कर्तव्यों, संवैधानिक सिद्धांतों और देशभक्ति और राष्ट्रीय पहचान की गहरी भावना को विकसित करने का भी प्रयास करती है। यह उद्देश्य एक व्यापक पाठ्यक्रम और शैक्षणिक ढांचे को लागू करके पूरा किया जाएगा जो नीति के निर्देशानुसार हमारे शैक्षणिक संस्थानों के लिए एक मार्गदर्शक शक्ति के रूप में काम करेगा।

3.महत्वपूर्ण सोच को बढ़ाने के लिए पाठ्यक्रम सामग्री को कम करने का प्रयास

आलोचनात्मक सोच को प्राथमिकता देने और सीखने के लिए अधिक व्यापक, खोजपूर्ण, खोजी, संवादी और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण की सुविधा के लिए, पाठ्यक्रम में प्रत्येक विषय में सामग्री को सुव्यवस्थित करके केवल मौलिक अवधारणाओं और ज्ञान पर ध्यान केंद्रित करने के लिए संशोधन किया जाएगा।

4.शिक्षण और सीखने के दृष्टिकोण में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन आएगा, जिसमें बढ़ी हुई अन्तरक्रियाशीलता पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। छात्रों को प्रश्न पूछने और कक्षा सत्रों में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा, जिन्हें विभिन्न प्रकार की आकर्षक और मनोरंजक गतिविधियों को शामिल करने के लिए डिज़ाइन किया जाएगा। इन गतिविधियों का उद्देश्य रचनात्मकता, सहयोग और अन्वेषण को बढ़ावा देना होगा, जिससे छात्रों को उन विषयों की गहरी समझ मिलेगी जो वे पढ़ रहे हैं। इन अनुभवात्मक शिक्षण अनुभवों के माध्यम से, छात्र अपने ज्ञान को व्यावहारिक और सार्थक तरीकों से लागू करने में सक्षम होंगे।

5.पाठ्यक्रम विकल्पों में लचीलेपन के माध्यम से छात्रों को सशक्त बनाना

छात्रों को विषय विकल्पों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करने पर नया जोर माध्यमिक विद्यालय शिक्षा की एक परिभाषित विशेषता बनने की ओर अग्रसर है। इस बदलाव के साथ छात्रों को अपनी पढ़ाई को अपनी विशिष्ट आवश्यकताओं और लक्ष्यों के अनुरूप बनाने के लिए सशक्त बनाया जाएगा, जिससे अधिक व्यक्तिगत और पूर्ण शैक्षणिक अनुभव का मार्ग प्रशस्त होगा। शिक्षकों के बीच इस बात की मान्यता बढ़ रही है कि माध्यमिक विद्यालय के छात्रों, विशेष रूप से किशोरावस्था में रहने वाले छात्रों को, विशेष रूप से शारीरिक शिक्षा, कला और शिल्प और व्यावसायिक कौशल के क्षेत्रों में अध्ययन किए जाने वाले विषयों को चुनने में अधिक लचीलेपन और स्वायत्तता से बहुत लाभ होगा। छात्रों को अपनी शैक्षणिक गतिविधियों पर अधिक नियंत्रण रखने की अनुमति देकर, वे सक्रिय रूप से अपने स्वयं के शैक्षणिक पथ और अंततः, अपने भविष्य के जीवन को आकार दे सकते हैं।

निष्कर्ष :

छात्रों को उनके द्वारा अध्ययन किए जाने वाले विषयों में अधिक लचीलापन और विकल्प प्रदान करने के महत्व की मान्यता माध्यमिक विद्यालय शिक्षा में गति पकड़ रही है। छात्रों को शारीरिक शिक्षा, कला और शिल्प और व्यावसायिक कौशल में उनकी रुचि को आगे बढ़ाने की अनुमति देकर, स्कूल समग्र विकास को बढ़ावा दे सकते हैं और छात्रों को अपने शैक्षिक और जीवन पथ को आकार देने में सक्षम बना सकते हैं। विषयों और पाठ्यक्रमों की एक विस्तृत श्रृंखला की उपलब्धता आधुनिक माध्यमिक विद्यालय शिक्षा की एक विशिष्ट विशेषता होगी जिससे यह सुनिश्चित होगा कि छात्रों को अपने भविष्य के प्रयासों के लिए आवश्यक कौशल प्राप्त करने के साथ-साथ अपने जुनून और प्रतिभा का पता लगाने का अवसर मिलेगा। इसके अलावा माध्यमिक विद्यालय शिक्षा में अधिक लचीले विषय विकल्पों की शुरूआत पारंपरिक एक-आकार-सभी के लिए फिट दृष्टिकोण से एक महत्वपूर्ण प्रस्थान का प्रतिनिधित्व करती है। अतीत में, छात्र अक्सर विषयों के पूर्व निर्धारित सेट तक ही सीमित रहते थे, जो उनके व्यक्तिगत हितों या आकांक्षाओं के साथ संरेखित नहीं हो सकते थे। इस कठोर संरचना ने रचनात्मकता को अवरुद्ध कर दिया था और व्यक्तिगत विकास में बाधा उत्पन्न की। छात्रों को उनके पाठ्यक्रम में अधिक विकल्प और विकल्प प्रदान करने की दिशा में यह बदलाव समग्र विकास को बढ़ावा देने और युवा व्यक्तियों के विविध हितों और प्रतिभाओं को पूरा करने की इच्छा से प्रेरित है। यह व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है कि सभी छात्र गणित या विज्ञान जैसे पारंपरिक शैक्षणिक विषयों में उत्कृष्ट प्रदर्शन नहीं करते हैं। कुछ लोगों का शारीरिक शिक्षा, कला या व्यावसायिक कौशल के प्रति स्वाभाविक झुकाव हो सकता है और इन प्रतिभाओं का पोषण और समर्थन करना आवश्यक है। विषयों और पाठ्यक्रमों की एक विस्तृत श्रृंखला की पेशकश करके, माध्यमिक विद्यालय यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि छात्रों को अपने जुनून और शक्तियों का पता लगाने और विकसित करने का अवसर मिले। यह दृष्टिकोण न केवल सीखने में संतुष्टि और आनंद की भावना को बढ़ावा देता है बल्कि छात्रों को मूल्यवान कौशल और ज्ञान प्राप्त करने में भी सक्षम बनाता है जिसे उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं में लागू किया जा सकता है।

शैक्षिक ढांचे में कला, मानविकी और विज्ञान विषयों के साथ-साथ व्यावसायिक और शैक्षणिक धाराओं के संबंध में बिना किसी कठोर सीमा के पाठ्यचर्या, पाठ्येतर और सह-पाठयक्रम गतिविधियों का संयोजन शामिल होगा। पाठ्यक्रम विज्ञान, मानविकी और गणित जैसे पारंपरिक विषयों से आगे बढ़ेगा, और इसमें शारीरिक शिक्षा, कला और शिल्प, और व्यावसायिक कौशल जैसे विविध विषय शामिल होंगे, जो सभी छात्रों की उम्र और रुचियों के अनुरूप होंगे।

***सहायक आचार्य**
लोक प्रशासन
राजकीय महाविद्यालय, रूपवास

संदर्भः

1. https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/national-education-policy-
2. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_final_HINDI_0.pdf
3. https://news.sarvgyan.com/new-education-policy-nep-2020-hindi
4. https://www.abplive.com/education/nep-2020-play-an-important-role-in-the-economic-and-social-development-of-the-country-2330722

5. https://leverageedu.com/blog/hi/new-education-policy-new-education-policy-kya-hai-aur-iska-uddeshya-kya-hai/
6. https://pmmodiyojanaye.in/national-education-policy-2020/
7. https://www.amarujala.com/education/nep-india-s-guiding-light-for-achieving-vision-of-g20-promoting-lifelong-learning-pradhan
8. https://bansalnews.com/nep-2020-this-is-the-national-new-education-policy-2020-know-how-much-it-will-prepare-the-future-of-youth/